International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य कुरुक्षेत्र में राष्ट्र भावना

राकेश कुमार शर्मा

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

सार

दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है। हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। दिनकर जी ओज और पौरुष के कवि हैं। यहाँ 'ओज' शब्द का अर्थ उनकी क्रान्तिकारी राष्ट्रीय और वीरतायुक्त रचनाओं से है एवं 'पौरुष' का अर्थ कार्य से है। अतः पहले दिनकर जी की ओजस्वी वाणी जो राष्ट्रीयता से मुखरित हुई है, पर विचार आवश्यक है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ' (23 सितम्बर 1908- 24 अप्रैल 1974) हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे।[1][2] वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीयता को इनके काव्य की मूल-भूमि मानते हुए इन्हे 'युग-चारण' व 'काल के चारण' की संज्ञा दी गई है।[3]

'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल शृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है।

परिचय

दिनकर जी की राष्ट्रीयता पर उनके युग का प्रभाव पड़ा है। उनका युग दलित और शोषण युग था। छायावादी कवि उस परिस्थिति से कतरा कर निकल चुके थे, लेकिन दिनकर जी सीना तानकर आगे आये और तत्कालीन परिस्थितियों से लोहा लिया। उन्होंने बड़े साहस के साथ भारत माता की स्वतन्त्रता की बेड़ियों को काटने के लिए अपने ओजस्वी विचार की खड्ग धारण की।[1]

परिगणित वर्ग के नाम पर अंग्रेजों द्वारा किये गये साम्प्रदायिक अवार्ड से हिन्दू जाति की श्रृंखलाबद्धता को विश्रृंखलित होने का खतरा देख महात्मा गाँधी क्षुब्ध हो उठे और इसके विरोध में उन्होंने अनश किया और अछूतोद्धार का नारा देश को दिया। रूढ़िवादी तथा समाज में स्वयं को श्रेष्ठ समझाने वाला ब्राह्मण वर्ग तिलमिला उठा और उस तिलमिलाहट में गाँधी की हत्या तक करा देने का प्रयत्न किया। अछूतों द्वारा आन्दोलन को कवि युग धर्म मानता है, अतएव उसकी रक्षा हेतु वह बोधिसत्व का आह्वान करता है-

जागो! गाँधी पर किये नर पशु पतितों के वारों से,
जागो! मैत्री निर्घोष! आज व्यापक युग धर्म पुकारो से,
जागो गौतम! जागो महान् ।
जागो अतीत के क्रान्ति गान।

'दिनकर' जी का जन्म 24 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। १९३४ से १९४७ तक बिहार सरकार की सेवा में सब-रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। १९५० से १९५२ तक लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर 1963 से 1965 के बीच कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने।

उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय[4] के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिये भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे।

द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ काव्यों में ७४वाँ स्थान दिया गया।[5]

1947 में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचे। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। दिनकर 12 वर्ष तक संसद-सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन 1964 से 1965 ई. तक भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई. तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए। फिर तो ज्वार उमरा और रेणुका, हुंकार, रसवंती और द्वंद्वगीत रचे गए। रेणुका और हुंकार की कुछ रचनाऐं यहाँ-वहाँ प्रकाश में आईं और अग्रेज प्रशासकों को समझते देर न लगी कि वे एक ग़लत आदमी को अपने तंत्र का अंग बना बैठे हैं और दिनकर की फ़ाइल तैयार होने लगी, बात-बात पर क़ैफ़ियत तलब होती और चेतावनियाँ मिला करतीं। चार वर्ष में बाईस बार उनका तबादला किया गया।

रामधारी सिंह दिनकर स्वभाव से सौम्य और मृदुभाषी थे, लेकिन जब बात देश के हित-अहित की आती थी तो वह बेबाक टिप्पणी करने से कतराते नहीं थे। रामधारी सिंह दिनकर ने ये तीन पंक्तियाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध संसद में सुनायी थी, जिससे देश में भूचाल मच गया था। दिलचस्प बात यह है कि राज्यसभा सदस्य के तौर पर दिनकर का चुनाव पणृडित नेहरु ने ही किया था, इसके बावजूद नेहरू की नीतियों का विरोध करने से वे नहीं चूके।

देखने में देवता सदृश्य लगता है
बंद कमरे में बैठकर गलत हुक्म लिखता है।
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा हो
समझो उसी ने हमें मारा है॥

1962 में चीन से हार के बाद संसद में दिनकर ने इस कविता का पाठ किया जिससे तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू का सिर झुक गया था. यह घटना आज भी भारतीय राजनीती के इतिहास की चुनिंदा क्रांतिकारी घटनाओं में से एक है.

रे रोक युद्धिष्ठिर को न यहां जाने दे उनको स्वर्गधीर
फिरा दे हमें गांडीव गदा लौटा दे अर्जुन भीम वीर॥[6]

इसी प्रकार एक बार तो उन्होंने भरी राज्यसभा में नेहरू की ओर इशारा करते हए कहा- "क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया है, ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाए जा सकें?" यह सुनकर नेहरू सहित सभा में बैठे सभी लोगसन्न रह गए थे। किस्सा 20 जून 1962 का है। उस दिन दिनकर राज्यसभा में खड़े हुए और हिंदी के अपमान को लेकर बहुत सख्त स्वर में बोले। उन्होंने कहा-

देश में जब भी हिन्दी को लेकर कोई बात होती है, तो देश के नेतागण ही नहीं बल्कि कथित बुद्धिजीवी भी हिन्दी वालों को अपशब्द कहे बिना आगे नहीं बढ़ते। पता नहीं इस परिपाटी का आरम्भ किसने किया है, लेकिन मेरा ख्याल है कि इस परिपाटी को प्रेरणा प्रधानमंत्री से मिली है। पता नहीं, तेरह भाषाओं की क्या किस्मत है कि प्रधानमंत्री ने उनके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, किन्तु हिन्दी के बारे में उन्होंने आज तक कोई अच्छी बात नहीं कही। मैं और मेरा देश पूछना चाहते हैं कि क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया था ताकि सोलह करोड़ हिन्दीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाएँ? क्या आपको पता भी है कि इसका दुष्परिणाम कितना भयावह होगा?

यह सुनकर पूरी सभा सन्न रह गई। ठसाठस भरी सभा में भी गहरा सन्नाटा छा गया। यह मुर्दा-चुप्पी तोड़ते हुए दिनकर ने फिर कहा- 'मैं इस सभा और खासकर प्रधानमन्त्री नेहरू से कहना चाहता हूँ कि हिन्दी की निन्दा करना बन्द किया जाए। हिन्दी की निन्दा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुँचती है।'[7]

प्रमुख कृतियाँ

उन्होंने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की। एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया। उनकी महान रचनाओं में रश्मिरथी और परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है। उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत है। भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

ज्ञानपीठ से सम्मानित उनकी रचना उर्वशी की कहानी मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द-गिर्द घूमती है। उर्वशी स्वर्ग परित्यक्ता एक अप्सरा की कहानी है। वहीं, कुरुक्षेत्र, महाभारत के शान्ति-पर्व का कवितारूप है। यह दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लिखी गयी रचना है। वहीं सामधेनी की रचना कवि के सामाजिक चिन्तन के अनुरुप हुई है। संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने कहा कि सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद भारत एक देश है। क्योंकि सारी विविधताओं के बाद भी, हमारी सोच एक जैसी है।

विचार-विमर्श

इसी प्रकार सशस्त्र क्रान्ति के इस परतन्त्रता की बेड़ियों को काटने में विश्वास करने वाले युवा क्रान्तिकारियों-भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ, बटुकेश्वर दत्त आदि पर जेल में उन पर किये जाने वाले अत्याचार से जहाँ सारा देश उत्तेजित हो उठा था वहीं दिनकर भी इससे अछूते नहीं रहे। यतीन्द्रनाथ की शहादत पर कवि ने 200 पंक्तियों की एक लम्बी कविता लिख डालीं।[2]

'रेणुका' की राष्ट्रीय चेतना में करुणा और अवसाद का स्वर केवल अतीत से सम्बन्धित कविताओं में ही नहीं प्रत्युत वर्तमान परिस्थितियों से प्रेरित रचनाओं में भी मिलता है। यों वह गाँधी में प्रतिपूर्ण श्रद्धा एवं आस्था रखते थे, लेकिन उनकी अहिंसा की नीति के पूर्ण समर्थक कभी नहीं रहे क्योंकि बंगाल और बिहार के क्रान्तिकारियों के आन्दोलन से प्रभावित थे। अतएव स्वाधीनता प्राप्ति के लिए हिंसा का मार्ग अपनाने में भी उन्हें हिचक नहीं थी। निम्न पंक्तियाँ इसकी पुष्टि कर देती हैं-

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दो उनको स्वर्ग धीर
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा, लौटा दे अर्जुन-भीम वीर!!

'उठ जागो, हुंकारो, कुछ मान करो' के स्वर में 'हुंकार' रचना में जनशक्ति को कवि चुनौती देता है। 'हुंकार' काव्य-संग्रह में 'अनल किरीट' कविता में देशवासियों को विदेशी शासकों के अत्याचारों से मुकाबला करने के लिए प्रणों तक की बलि चढ़ा देने की प्रेरणा देता है। 'कल्पना की दिशा' में गाँधी की नीति का विरोध स्वर मुखरित हुआ है और 'असमय आह्वान' में कवि मन का द्वन्द्व ही नहीं बल्कि उस युग के युवक वर्ग का द्वन्द्व व्यक्त हुआ है।

अपने देश के साम्प्रदायिक दंगों से क्षुब्ध होकर दिनकर कह उठते हैं-

बहाया जा रहा इन्सान का सींगवाले जानवर के प्यार में।
कोम की तकदीर फोड़ी जा रही मस्जिदों की ईंट की दीवार में।

वहीं विश्व पटल पर हिटलर के अत्याचारों से कह को वह कूटक्ति कहते हैं-

राइन तट पर खिली सभ्यता हिटलर खड़ा मौन बोले।
सस्ता खून यहूदी का है, नाली जिन स्वास्तिक धोले ॥

'सामधेनी' और 'कुरुक्षेत्र काव्य की रचना द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों द्वारा भोगी गयी कठिनाइयों और विपत्तियों को पृष्ठभूमि बनाकर हुई है तथा राजनीति, स्थितियाँ और चेतना से प्रभावित है। सन् 1942 ई. में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास होने पर अंग्रेजों का दमन-चक्र निर्ममतापूर्वक चला। 'आग की अग्नि' इसी पीड़ित जनता का ही चित्र है-

सुलगती नहीं यज्ञ की आग दिशा धूमिल यजमान अधीर,
पुरोधा कवि कोई है यहाँ? देश को दे ज्याला के तीर।

देश की छोटी लेकिन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ और समस्याएँ भी दिनकर की दृष्टि के स्पर्श से बची नहीं रह सकीं। आजाद हिन्द सेना के बलिदान और वीरता की कहानी 'सरहद के पार' तथा 'फूलेगी डालों में तलवार' शीर्षक कविताओं में कही गयी हैं। गाँधी की निर्मम हत्या से पीड़ित होकर कवि 'वज्रपात' और 'अपघटन घटना का समाधान' लिखने को प्रेरित हुआ, तो दिल्ली और मास्को में भारत के साम्यवादियों की राष्ट्र विरोधी नीतियों और मास्को-मुखी दृष्टिकोण से क्षुब्ध होकर उन्हें स्वदेश के प्रति अपने कर्तव्य का बोध करवाया। बिहार में हुए दंगे से दुःखी होकर उन्होंने 'हे मेरे स्वदेश' शीर्षक कविता में लज्जा, ग्लानि और विवशता का चित्रण किया है-

यह विकटं भास! यह कोलाहल! इस वन में मन उकसाता है।
भेड़िये ठठाकर हँसते हैं, मनु का बेटा चिल्लाता है।

रचनाओं के कुछ अंश

किस भांति उठूँ इतना ऊपर?[3]
मस्तक कैसे छू पाउँ मैं?
ग्रीवा तक हाथ न जा सकते,
उँगलियाँ न छू सकती ललाट
वामन की पूजा किस प्रकार,
पहुँचे तुम तक मानव विराट?
रे रोक युधिष्ठर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर
पर फिरा हमें गांडीव गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर --(हिमालय से)
क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो;

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

उसको क्या जो दन्तहीन, विषहीन, विनीत, सरल हो। -- (कुरुक्षेत्र से)
पत्थर सी हों मांसपेशियाँ, लौहदंड भुजबल अभय;
नस-नस में हो लहर आग की, तभी जवानी पाती जय। -- (रश्मिरथी से)
हटो व्योम के मेघ पंथ से, स्वर्ग लूटने हम जाते हैं;
दूध-दूध ओ वत्स तुम्हारा, दूध खोजने हम जाते है।
सच पूछो तो सर में ही, बसती है दीप्ति विनय की;
सन्धि वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है;
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।"
दो न्याय अगर तो आधा दो, पर इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम।-- (रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)
जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है। -- (रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)।।
वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो,
है रुकी जहाँ भी धार शिलाएं तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं का पकड़ निचोड़ो,
-- (वीर से)

परिणाम

इस प्रकार आजादी मिलने के पश्चात् देश को देशवासियों की आशा के अनुरूप प्रगति और विकास करते न देखकर कवि 'जनतन्त्र का जन्म' नामक कविता लिखता है तथा 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है" कहकर तत्कालीन शासक जन-प्रतिनिधियों को भी चुनौती दे डाली है। इन रचनाओं में क्रान्ति का उद्घोष है, हृदय की ज्वाला है, दास्ताँ की पीड़ा और उसके विरुद्ध विद्रोह की भावना है। पीड़ित मानवता और दलित समाज के प्रति दिनकर की सहानुभूति सहज ही फूट पड़ी है। मैथिलीशरण गुप्त के पश्चात् राष्ट्रीय भावधारा को अपने युग के अनुसार चित्रित करने में दिनकर ही प्रमुख हैं।

दिनकर की रचना में विश्व कल्याण की महती भावना की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसी रचनाएँ विश्व कल्याण की पोषक हैं। कवि विश्व क्रान्ति द्वारा शान्ति चाहता है। विश्व की विषम परिस्थितियाँ उसको उसी प्रकार उद्वेलित करती हैं जिस प्रकार देश की विषम परिस्थितियाँ उसे चैन नहीं लेने देतीं।[4]

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना वर्तमान की पुकार से सजग होती हैं और क्रान्ति का नारा लगाती है। उसे शक्ति के प्रति अगाध आस्था है-

बल के सम्मुख विनत मेड़-सा, अम्बर शीश झुकाता है।
इससे बढ़ सौन्दर्य दूसरा, तुम को कौन सुहाता है?
है सौन्दर्य शक्ति का अनुचर, सुन्दरता निस्सार वस्तु है
हो न साथ में शक्ति अगर!
दिनकर की राष्ट्रीय चेतना पर सत्य और अहिंसा के प्रभाव के दो स्रोत हैं- (i) प्रतीक की परम्परा का प्रभाव (ii) गाँधी का प्रभाव। वह एक ओर अहिंसावाद नीति का विरोध करते हैं तो दूसरी और शक्ति और क्रान्ति के महत्त्व का वर्णन करते हैं। 'परशुराम की प्रतीक्षा' में अहिंसा की नीति का विरोध करते हुए प्रतिशोध शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

गीता में जो त्रिपिटिक निकाल पढ़ते हैं,
तलवार गलाकर जो तकली गड़ते हैं।
शीतल करते हैं अनल प्रबुद्ध प्रजा का,
शेरों को सिखलाते हैं कार्य अजा का।
जब तक प्रसन्न वह अनल सुगुण हँसते हैं

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

निष्कर्ष

दिनकरजी को उनकी रचना कुरुक्षेत्र के लिये काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तरप्रदेश सरकार और भारत सरकार से सम्मान मिला। संस्कृति के चार अध्याय के लिये उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 1959 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया। भागलपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति और बिहार के राज्यपाल जाकिर हुसैन, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, ने उन्हें डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। गुरू महाविद्यालय ने उन्हें विद्या वाचस्पति के लिये चुना। 1968 में राजस्थान विद्यापीठ ने उन्हें साहित्य-चूड़ामणि से सम्मानित किया। वर्ष 1972 में काव्य रचना उर्वशी के लिये उन्हें ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया। 1952 में वे राज्यसभा के लिए चुने गये और लगातार तीन बार राज्यसभा के सदस्य रहे।[5]

मरणोपरान्त सम्मान

30 सितम्बर 1987 को उनकी 13वीं पुण्यतिथि पर तत्कालीन राष्ट्रपति जैल सिंह ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। 1999 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मन्त्री प्रियरंजन दास मुंशी ने उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर रामधारी सिंह दिनकर- व्यक्तित्व और कृतित्व पुस्तक का विमोचन किया।

उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर बिहार के मुख्यमन्त्री नीतीश कुमार ने उनकी भव्य प्रतिमा का अनावरण किया। कालीकट विश्वविद्यालय में भी इस अवसर को दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

दिनकर ने अपने काव्य में राष्ट्रीय भावना के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है- "संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया था, किन्तु मेरा मन भी चाहता था कि गर्जना तर्जन से दूर रहूं और केवल ऐसी ही कविताएँ लिखूं जिनमें कोमलता और कल्पना का उभार हो..... और सुयश तो मझे 'हुंकार' से ही मिला, किन्तु आत्मा अब भी 'रसवन्ती' में बसती है। राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं आती। उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया है। [7] दिनकर के काव्य में प्रणय और राष्ट्रीयता की दो समान धाराएँ प्रवाहित हुई हैं।" अतः स्पष्ट है कि दिनकर जी ओज और पौरुष के कवि हैं। उनकी रचनाओं में कर्मवाद की चेतना के दर्शन होते हैं।[6]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. जीवनी एवं रचनाएँ Archived 2006-07-13 at the Wayback Machine अनुभूति पर.
2. ↑ "साहित्य अकादमी पुरस्कार". मूल से 7 अगस्त 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 फ़रवरी 2009.
3. ↑ Dāmodara, Śrīhari (1975). Ādhunika Hindī kavitā meṃ rāshṭrīya bhāvanā, san 1857-1947. Bhārata Buka Ḍipo. पृ॰ 472. उन्हें युग चारण की संज्ञा देकर हिन्दी के आलोचकों ने उनके काव्य की मूल भूमि को राष्ट्रीयता माना है।
4. ↑ Sahitya Akademi Awards 1955-2007 Archived 2007-07-04 at the Wayback Machine साहित्य अकादमी पुरस्कारों का आधिकारिक जाल स्थल
5. ↑ "Top 100 famous epics of the World" [विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य] (अंग्रेज़ी में). मूल से 14 दिसंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 दिसम्बर 2013.
6. ↑ वो थे दिनकर, जिन्होंने संसद में नेहरू के खिलाफ पढ़ी थी कविता
7. ↑ नई दुनिया, सम्पादकीय पृष्ठ, दिनांक ११ फरवरी, २०२०